

निजी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की बैठक में
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का भाषण

दिनांक 03 जुलाई 2023, सोमवार

समय : 10:00 AM

स्थान : राजभवन, असम

असम के निजी विश्वविद्यालयों के सम्मानित कुलाधिपति और प्रिय कुलपतियों।

काफी समय से मैं आपके साथ बातचीत करने के बारे में सोच रहा था ताकि मैं आपके द्वारा इतने वर्षों से उच्च शिक्षा के लिए किए जा रहे अच्छे कार्यों के लिए अपनी सराहना कर सकूँ। आप सभी हमारे लिए बहुत खास हैं और इसीलिए आज आपके लिए एक अलग और विशेष बैठक आयोजित की गई है।

आप सभी जानते हैं कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र का मुख्य स्तम्भ है। इसकी गुणवत्ता और मजबूत नैतिक मूल्यों और देशभक्ति के साथ नौकरी के लिए स्नातकों को तैयार करने के मामले में इसकी प्रभावशीलता देश का भविष्य निर्धारित करती है। राष्ट्र निर्माण में शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह देश के भविष्य के विकास के लिए हमारे युवाओं को प्रशिक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मानव संसाधन बनाने और 21वीं सदी और उससे आगे की जरूरतों को पूरा करने के लिए संसाधनों को ढालने के क्षेत्र में उच्च शिक्षा संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, अब समय आ गया है कि आपको खुद को फिर से तैयार करना होगा। इसलिए, मैंने 21वीं सदी की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने संस्थानों को संरेखित करने की दिशा में अपनी भूमिका के साथ-साथ उच्च शिक्षा के विकास में योगदान देने के लिए आप सभी के लिए कुछ मुद्दों पर विचार करने और व्यावहारिक कदम उठाने के बारे में सोचा है।

आप सभी जानते हैं कि पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र, सतत मूल्यांकन और छात्र सहायता गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आधारशिला हैं। उपयुक्त संसाधन और बुनियादी ढाँचे जैसे गुणवत्तापूर्ण पुस्तकालय, कक्षाएँ, प्रयोगशालाएँ, प्रौद्योगिकी, खेल/मनोरंजन क्षेत्र आदि प्रदान करने के साथ-साथ यह सुनिश्चित करने के लिए कई पहल की आवश्यकता होगी कि सीखने का माहौल सभी विद्यार्थियों को सफल होने में सक्षम बनाने के लिए सहायक हो।

1. आपको अपनी संस्थागत विकास योजना (आईडीपी) और रोडमैप को परिभाषित लक्ष्यों के साथ डिजाइन करना चाहिए। आपके संस्थान को अपनी शैक्षणिक योजनाओं को अपनी बड़ी आईडीपी में एकीकृत करना चाहिए। आपका संस्थान छात्रों के समग्र विकास और मजबूत आंतरिक निर्माण के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर उच्च शिक्षा के प्रत्येक संस्थान में विषय-केंद्रित क्लबों जैसे विज्ञान, गणित, कविता, भाषा, साहित्य, वाद-विवाद, संगीत, खेल आदि के लिए समर्पित क्लब और कार्यक्रमों एवं गतिविधियों, के वित्तपोषण के लिए तंत्र और अवसर होने चाहिए।

उपयुक्त संकाय विशेषज्ञता और परिसर में छात्रों की मांग विकसित होने के बाद ऐसी गतिविधियों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है।

2. भारतीय ज्ञान प्रणालियों के लिए आपकी योजना भी सफलता की कुंजी है। "भारत का ज्ञान" में प्राचीन भारत का ज्ञान और आधुनिक भारत में इसका योगदान और इसकी सफलताएँ एवं चुनौतियाँ शामिल हैं। जनजातीय ज्ञान और सीखने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीकों सहित भारतीय ज्ञान प्रणालियों को गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल के साथ-साथ शासन, राजनीति और संरक्षण में भी शामिल किया जाएगा। आदिवासी जातीय-औषधीय प्रथाओं, वन प्रबंधन, पारंपरिक फसल की खेती,

प्राकृतिक खेती आदि में विशिष्ट पाठ्यक्रम भारत को विश्व गुरु बनाने की दिशा में एक लंबा रास्ता तय करेंगे, जिसके लिए हम आशावादी हैं।

3. सभी व्यक्तियों के विकास के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि सीखने के प्रत्येक चरण में कौशल और मूल्यों को शामिल किया जाना चाहिए। सामाजिक स्तर पर, उच्च शिक्षा को एक प्रबुद्ध, सामाजिक रूप से जागरूक, जानकार और कुशल राष्ट्र के विकास में सक्षम बनाना चाहिए, जो अपनी समस्याओं का प्रभावी समाधान ढूंढ और कार्यान्वित कर सके। उच्च शिक्षा को ज्ञान सृजन और नवाचार का आधार बनाना चाहिए, जिससे देश की बढ़ती अर्थव्यवस्था में योगदान दिया जा सके।

गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिगत रोजगार के लिए अधिक अवसर पैदा करने से कहीं अधिक है। यह अधिक जीवंत, सामाजिक रूप से संलग्न, सहकारी समुदायों और एक खुशहाल, एकजुट, सुसंस्कृत, उत्पादक, नवीन, प्रगतिशील और समृद्ध राष्ट्र की कुंजी का प्रतिनिधित्व करता है।

4. विश्वविद्यालयों को नवाचार और लचीलेपन को बढ़ावा देने के लिए च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस) के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। उच्च शिक्षा के सभी संस्थानों को एक मानदंड-आधारित ग्रेडिंग प्रणाली अपनानी चाहिए, जो प्रत्येक कार्यक्रम के लिए सीखने के लक्ष्यों के आधार पर विद्यार्थियों की उपलब्धि का आकलन करती है, जिससे प्रणाली निष्पक्ष हो जाती है और परिणाम अधिक तुलनीय हो जाते हैं।

इसके अलावा, एक अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) स्थापित किया जाना चाहिए, जो उच्च शिक्षा के विभिन्न मान्यता प्राप्त संस्थानों से अर्जित अकादमिक क्रेडिट को डिजिटल रूप से संग्रहीत करेगा ताकि उच्च

शिक्षण संस्थानों से डिग्री अर्जित क्रेडिट को ध्यान में रखते हुए प्रदान की जा सके।

विश्वविद्यालयों में अध्ययन के लिए विषयों के रचनात्मक संयोजन को सक्षम बनाने और मल्टीपल एंट्री और एक्जिट प्वाइंट्स प्रदान करने के लिए लचीली पाठ्यक्रम संरचनाएं भी होनी चाहिए। इससे वर्तमान में बाधाएं दूर होंगी और जीवन भर सीखने की नई संभावनाएँ पैदा होंगी। यह शिक्षा, सरकार और उद्योग सहित मल्टीडिसिप्लिनेरी कार्यों के अवसर भी प्रदान करेगा।

5. मल्टीडिसिप्लिनेरी शिक्षा और अनुसंधान के लिए स्वायत्त कॉलेजों सहित उच्च शिक्षा संस्थानों और कॉलेजों के क्लस्टरिंग के विचार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। क्लस्टर प्रणाली सह नामांकन वाले एकल संकाय वाले शिक्षण संस्थानों को नए मल्टीडिसिप्लिनेरी कोर्स प्रदान करने में मदद करेगी।

6. चूंकि निजी विश्वविद्यालयों के पास कई कार्यक्रम हैं, वे दूसरों को अपने कार्यक्रम दे सकते हैं ताकि अन्य विश्वविद्यालय एकेडेमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के माध्यम से मल्टीडिसिप्लिनेरी पाठ्यक्रमों आदि का लाभ उठा सकें।

आपका अधिक समय न लेते हुए, मैं आशा करता हूँ कि आप में से हर एक व्यक्ति अपने संबंधित विश्वविद्यालय को सीखने का एक महान स्थान बनाने और समाज एवं राष्ट्र के विकास में सकारात्मक योगदान देने का प्रयास करेगा। मैं आपकी सफलता की कामना करता हूँ।

आपकी उपस्थिति के लिए आप सभी को धन्यवाद।

जय हिन्द